लेकिन कल की जो हालत होगी, वह दूसरी ही होगी। सियासी जमातें तो पुराने जमाने की बात हो गयी है। यह साइन्स का जमाना है। इस समय कुछ देशों के हाथों में ऐसी कूवतें आयी हैं कि वे चाहें तो दुनिया का खात्मा कर सकते हैं। इसलिए अगर हम सियासी पार्टियाँ बनाकर आपस में लड़ते-झगड़ते रहेंगे तो दुनिया को उन खौफ़नाक हथियारों से कभी नहीं बचा सकेंगे। कभी न कभी उन हथियारों का इस्तेमाल होगा और दुनिया का खात्मा होने का डर रहेगा। इसलिए हमें समझना चाहिए कि कल की और आज की सियासत में पार्टीवालों की जगह थी और बड़े-बड़े लोग उसमें पड़ते थे, लेकिन आगे की जिंदगी का जो नक्शा होगा, उसमें सियासत को वह जगह हासिल नहीं होगी, जो कि आज हासिल है।

पार्टी और खिदमत

मैं जिस लंबी नजर से देखता हूँ, उस नजर से उन जवानों ने नहीं देखा होगा, फिर भी वे इतना समझे हैं कि हमें पार्टीवालों के झगड़े में नहीं पड़ना चाहिए। ये सियासी पार्टीवाले गरीबों की खिदमत करते हैं तो उसमें भी उनका मकसद यही रहता है कि अपनी पार्टी को फायदा मिले। याने वे मीठी खिदमत में भी जहर मिला देते हैं। जहर मिलाया हुआ मीठा लड्डू भी किस काम का? नतीजा यह होता है कि वह खिदमत दिलों तक नहीं पहुँचती है, दिलों को जोड़ने का काम नहीं कर सकती है, दिलों को तोड़ने का ही काम कर सकती है। सच्ची खिदमत वही है, जिसके जरिये हम दिलों को जोड़ें। अगर मैंने सौ भाइयों की जिन्दगी के लिए कुछ इमदाद दी और उन्होंने मुझे चुनाव में वोट दिया तो नतीजा यह होगा कि मैंने इतने आदमी अपने बना लिये, जो दूसरों के खिलाफ रहनेवाले हैं। इस तरह मैंने दिलों को तोड़ने में, समाज के टुकड़े करने में मदद पहुँचायी। इसलिए पार्टी के फायदे के मक़सद से जो गरीबों की खिदमत की जाती है, वह सच्ची खिदमत नहीं है। वैसे पुराने बादशाह भी कुछ न कुछ खिदमत करते ही थे, जिससे कि गरीब लोग उनकी हुकूमत की ताईद करें। लेकिन वह खिदमत दिलों को जोड़वाली नहीं होती थी।

इन्किलाब तब आता है

नौजवानों ने हमारे इस विचार को पसन्द किया। उनकी पसन्दगी यह बता रही है कि नौजवानों का दिमाग कितना सलीम (बड़ा) है, साबित है, 'कल्बे-सलीम' (बड़ा दिल) है। यही तजुरबा मुझे हिन्दुस्तान के मुख्तलिफ सूबों में हुआ है। जगह-जगह मैंने देखा है कि जवानों को बाबा की बात जँचती है और वे समझते हैं कि बाबा जो काम करता है, वह इन्किलाब लानेवाला है। इन्किलाब तब होता है, जब 'इन्किलाबे-कल्ब' (हृदय में क्रांति) होता है। सिर्फ माहौल (वातावरण) बदलने से इन्किलाब नहीं होता। जब इन्किलाबे-कल्ब और माहौल में इन्किलाब, दोनों होते हैं। तब सच्चा इन्किलाब होता है। इस बात को उन नौजवानों ने महसूस किया

समस्या का हल प्यार से होगा

गरीब, अमीर का फर्क मिट जाना चाहिए, हवा और पानी के जैसे जमीन सब को मुहैया होनी चाहिए और हमें ऐसे खयाल से काम करना चाहिए कि हम अपने गाँव का एक कुनबा बनायेंगे। आज ही हमने अखबार में पढ़ा कि उत्तर प्रदेश के एक जिले के भूदान-काम के मुखिया को तीन गाँवों में भूदान मिला। मिली हुई जमीन गरीबों को देकर उन्होंने वहाँ किसीको भी बेजमीन नहीं रहने दिया। हमारा दिल कहता है कि कश्मीर में भी इसी तरह हो सकता है। लोग कहते हैं कि कश्मीर में जमीन का मसला हल हो चुका है, लेकिन अरे भाई, आप यह समझ लो कि यहाँपर कानून बन गया, किन्तु मसला हल नहीं हुआ है। मालिकों ने अपने भाई-भतीजों में जमीन बाँट ली है। फिर भी सरकार को जो कुछ थोड़ी-सी मिली, वह मुजारों में तक्सीम हुई, और बेजमीन ऐसे ही रह गये। मालिक, मुजारे और बेजमीन, इन तीनों को इकट्ठा करने का और दिल जोड़ने का काम कानून ने नहीं किया है, इसलिए अभी कश्मीर में जमीन का मसला कायम है। उसे अब प्यार से हल करना होगा। यहाँकी सरकार ने वादा किया है कि उसके पास जो जमीन है, वह बेजमीनों में बाँटी जायगी। जब तक मैं कश्मीर में हूँ, तब तक वह जमीन बटेगी तो कश्मीर की ताकत बढ़ेगी और कश्मीर की तथा दुनिया की तरक्की होगी।

हम सबको यह तय करना चाहिए कि भगवान ने बेजमीनों के घर में भी बच्चे दिये हैं तो उन्हें जमीन देना और दिलाना हमारा फर्ज है। मेरा भरोसा है कि लोगों के पास पहुँचने पर वे दिल खोलकर जमीन देंगे। सिर्फ उनके पास पहुँचनेवाले कारकून (कार्यकर्ता) चाहिए। ऐसे कारकून, जो अपनी कुछ जमीन दे चुके हों। सिर्फ नसीहत देनेवाले तो दुनिया में बहुत होते हैं, लेकिन अपना काम करके, प्यार से दूसरों के पास पहुँचनेवाले और उन्हें विचार समझानेवाले कारकून हों, तभी कामयाबी हासिल होती है।

कश्मीरी सीखें

मैंने देखा कि यहाँके लोग सिर्फ कश्मीरी ही समझते हैं। हमारी उर्दू तकरीरें तो जैसे सिर पर से गंगा बह जाती है, वैसे ही बह जाती हैं। मैं चाहता हूँ कि यहाँ स्कूलों में कश्मीरी सिखायी जाय। नहीं तो देहात और शहरों के बीच दिवाल खड़ी होगी और दोनों में टक्कर होगी, जो देश के लिए खतरनाक है। यहाँ उर्दू और हिन्दी खूब फले-फूले, लेकिन उतने से काम नहीं होगा। स्कूलों में अच्छी कश्मीरी भी सिखायी जानी चाहिए। हम सबका दिल एक हो। उसके लिए यह जरूरी है कि कश्मीरी में अच्छी अदब (साहित्य) बढ़े और सबको कश्मीरी अच्छी तरह से मालूम हो, तकरीरें भी उसीमें हों। ◆◆◆

अनुक्रम

१. यह समुदाय का युग है, इसमें 'मैं' और 'मेरा' नहीं चलेगा
नगरौठा ९ सितम्बर '५९ पृष्ठ ६९९
२. व्यापक दृष्टि से स्थिति को समझें और समस्या का हल करें
सीर १७ अगस्त '५९ " ७०१

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी
www.vinoba.in